टीवी चैनल्स में ब्रह्माकुमारीज के कार्यक्रम

पीस ऑफ माइन्ड चैनल २४ घंटे

राष्ट्रीय सहारा समय : सुबह 6.55-7 बजे, दोप.2.50–3 बजे
आस्था : रात्रि 7.10 से 7.40 बजे
जी–24 (छत्तीसगढ़): सुबह 5.30 से 6.00 बजे
जीटीवी (तमिल) : दोप. 2.30 बजे से 6 बजे (सोम. से शुक्र)
दीसा चैनल : सुबह 6.10 से 6.40

ईटीवी सुबह 5.00 से 5.30 (प्रतिदिन)
उ.प्र., म.प्र., बिहार, झारखण्ड, राजस्थान, महाराष्ट्र

ईटीवी – उड़ीसा, कर्नाटक –सुबह 5.30–6.00 (प्रतिदिन)

BSNL IP TV (Divine Box)
Om Shanti Channel (24 Hours)

EASY Box (BoL) (प्रतिदिन)
सुबह 7 बजे से रात्रि 11 बजे तक

मो टीवी – तेलगु सुबह 5.30 बजे से 6.00 बजे तक
मो म्युजिक – तेलगु सुबह 6.00 से 6.30 बजे तक
भक्ति – तेलगु सुबह 10.00

विदेश –आस्था इंटरनेशनल में – यूके – 8.40 जीएमटी
यूएसए व कनाडा 8.40 ईब, यूके व यूएस स्टार सुबह 7-7.30

आबू चैनल के अंतर्गत आबू भक्ति 24 घंटे म्युजिक चैनल

डिवाइन बाक्स के लिए सम्पर्क करें – 9414152296

ओम शान्ति मीडिया का नवीन संकलन ''कथा सरिता'' एवं ''हैप्पीनेस इंडेक्स'' अब उपलब्ध है

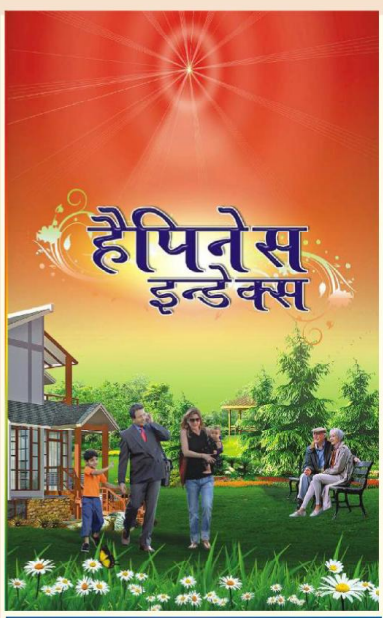

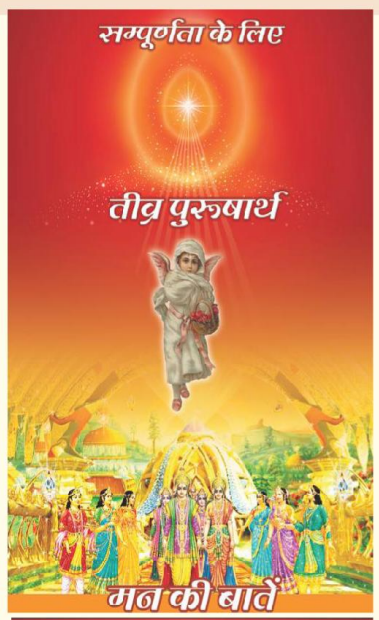

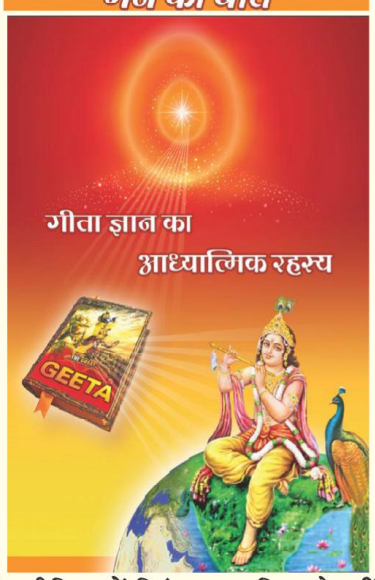

पाठकों की विशेष मांग पर ओम शान्ति मीडिया में निरंतर प्रकाशित हो रहीं शिक्षाप्रद कहानियों का संग्रह ''**कथा सरिता**'' तथा ब्र.कु.शिवानी की प्रवचनमाला का संग्रह ''**हैप्पीनेस इंडेक्स**'' अब उपलब्ध है। ओम शान्ति मीडिया, शांतिवन के कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं।

पीस ऑफ माइंड

आप सभी भाई-बहनों को यह सूचित करते हुए हमें अपार हर्ष हो रहा है कि ब्रह्माकुमारीज् का लोकप्रिय चैनल 'पीस ऑफ माइंड' पर शिवरात्रि आने से 10 दिन पहले से ही 'शिवरात्रि' के आध्यात्मिक रहस्य एवं परमात्मा के दिव्य अवतरण पर विशेष कार्यक्रम प्रसारित किये जायेंगे।

सूचना

ग्लोबल हॉस्पिटल एवं रिसर्च सेंटर, आबू पर्वत में 4 वर्षीय B.Sc. Nursing कोर्स अक्टूबर 2011 से प्रारंभ किया गया है और अभी भी इस कोर्स में दाखिला लिया जा सकता है। इस कोर्स को बहनें व भाई दोनों कर सकते हैं। इसके लिए 12 वीं कक्षा में Physics, Biology तथा English विषयों के साथ कम से कम 45 प्रतिशत अंक होना अनिवार्य है। यह कोर्स Indian Nursing Council, New Delhi तथा Rajasthan University of Health Sciences, Jaipur द्वारा मान्यता प्राप्त है।

B.Sc. Nursing के बाद M.Sc. Nursing तथा Ph.D भी की जा सकती है, अन्यथा सरकारी या गैर सरकारी संस्था में अच्छे वेतन पर नौकरी प्राप्त की जा सकती है।

दाखिले के लिए अधिक जानकारी हेतु आप मोबाइल नं. - 09414006969 पर महेन्द्र भाई से संपर्क कर सकते हैं।

सूचना

शिवरात्रि के शुभ अवसर पर 'ओम शांति मीडिया' द्वारा 'शिवरात्रि विशेषांक' बनाया गया है। जिसका उपयोग आप परमात्मा का संदेश देने में, समाचार पत्र-पत्रिकाओं तथा अपने व्यक्तव्य देने में कर सकते हैं। इस अंक को परमात्मा का दिव्य संदेश जन-जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से तैयार किया गया है। इसमें मुख्य रूप से परमात्मा का दिव्य अवतरण इस धरा पर होना तथा समय चक्र पर तर्क सहित लेखन का प्रकाशन किया गया है। जिसको आप अपने भाषण तथा प्रवचन में तथा साथ-साथ अन्य समाचार पत्रों में भी प्रकाशित करवा सकते हैं। जिससे कि हर मनुष्यात्मा तक परमात्मा का संदेश सुगमता से पहुंचाया जा सके। और आप उनका भी भाग्य बनाने के निमित्त बन सकते हैं।

कुदरत का नियम है परिवर्तन

चक्र माना जिसका आदि और अंत न हो। जो नित्य चलता रहता है। दिन और रात का चक्र, ऋतुओं का चक्र, मनुष्य पुनर्जन्म का चक्र, प्राकृति के सांयकल को भी अगर देखा जाय तो पानी वाष्पित होकर बादल बनते हैं, वो बादल जाकर के बरसते हैं, वो पानी फिर नदियों के द्वारा समुद्र में मिल जाती है, ये चक्र भी नित्य चलता रहता है। कोई भी चक्र की आदि और अंत नहीं होती है। दिन और रात के चक्र में कौन-सी घड़ी को आदि कहेंगे और कौनसी घड़ी को अंत ये नहीं कह सकते। हाँ, मनुष्य ने अपनी व्यवस्था को बनाये रखने के लिए रात को बारह बजे के बाद दूसरा दिन कह दिया, लेकिन जरूरी नहीं है कि रात को बारह बजे ही ये चक्र शुरू हुआ। इसी तरह ऋतुओं का चक्र कब शुरू हुआ पता नहीं है। हाँ, मनुष्य ने अपनी व्यवस्था को बनाने के लिए पहली जनवरी को नया साल कह दिया। किन्तु ये जरूरी थोड़ी ही है कि पहली जनवरी को ही ये चक्र आरंभ हुआ था। इसलिए कौन सी घड़ी को पहली घड़ी कहेंगे ये नहीं कह सकते। ऐसे ही ये सृष्टि का चक्र भी नित्य चलता रहता है, नित्य घूमता रहता है। हर चक्र को चार अवस्था से गुजरना पड़ता है। दिन और रात के चक्र की भी चार अवस्थाएं होती है - सुबह, दोपहर, शाम और रात्रि, रात्रि के बाद पुन: सुबह होती है। ऋतुओं की भी चार अवस्था होती है - ग्रीष्म, शीतकाल, वर्षा और वसंत ऋतु। फिर ग्रीष्म आ जाता। इसी तरह इस काल चक्र की भी चार अवस्थाएं हैं - सतयुग, त्रेतायुग, द्वापर और कलियुग। कलियुग के बाद पुन: सतयुग आता है। परिवर्तन कुदरत का नियम है।

भगवान इसलिए कहते हैं कि हे अर्जुन! कल्प के अंत में, जब कलियुग का अंत हो जाता है, तब सब मेरी प्रकृति अर्थात् मेरे समान स्वभाव को प्राप्त होते हैं। अर्थात् आत्मा पुन: अपने सतोगुण स्वरूप में आ जाती है। कल्प के आदि में मैं उनको बार-बार विशेष रूप से सृजन करता हूँ। सृजन अर्थात् जो अकृति या शरीर बिना अचेत है। आत्मा परमधाम में अपने निज स्वरूप में, प्रकाश पुंज में स्थित रहती है, मैं उन्हें जागृत करता हूँ। जागृत करके पुन: इस संसार में, प्रकृति का आधार लेने के लिए प्रेरित करता हूँ। फिर मैं उन्हें सतयुग, त्रेतायुग, द्वापर और कलियुग में पुन:पार्ट बजाने के लिए प्रेरित करता हूँ। कल्प का भाव है - उत्थानोमुख परिवर्तन अर्थात् उत्थान की ओर परिवर्तन अर्थात् आत्मा दैवी संस्कारों में प्रवेश पाती है। यही से कल्प का आरंभ होता है। वैसे ये चक्र है। चक्र कब शुरू होगा, कब पूरा होगा ये नहीं कह सकते हैं। वैसे इस चक्र की भी आदि अंत का पता नहीं है। उसका पहला पहर सुबह को माना जाता है। सुबह के समय में जब मनुष्यात्मा भी जागृत होकर के दिन भर के कर्म के लिए अपने आप को प्रेरित करती है फिर रात को सारा कर्म समेटकर के वो सो जाती है। ठीक इसी प्रकार, आत्मायें भी कल्प के अंत में अर्थात, कलियुग जब पूरा होता है, तो उस समय परमधाम जाती है। आत्मा, परमात्मा जैसे स्वरूप अर्थात् प्राकृति को प्राप्त करती है। अर्थात् उस स्वरूप में जाकर कुछ क्षण के लिए परमधाम में विश्राम करती है। फिर कल्प का आरंभ सुबह होती है। अर्थात् सतयुग का प्रारंभ होता है। उस समय पुन: वह दैवी संस्कारों में प्रवेश करती है। प्रवेश पाकर के जैसे नये सिरे से अपना पार्ट बजाने के लिए तैयार हो जाती है।

गीता ज्ञान का आध्यात्मिक रहस्य

-वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, ब्र.कु.उषा

सतयुग का समय है ही - संपूर्ण सत्यता का समय। जहाँ किसी भी प्रकार की असत्यता का नामो निशान नहीं है। जैसे सुबह के समय जब लालिमा होती है, प्राय: यह कितना श्रेष्ठ समय होता है। सुबह के समय में किसी के मन में भी बुरी भावनायें नहीं होती है या बुरा कर्म करने की प्रेरणा प्राप्त नहीं होती है। ठीक इसी तरह जब सतयुग का समय होता है, उस समय हर आत्मा के दैवी संस्कार जागृत होते हैं। सारी दुनिया में सत्यता का सम्पूर्ण समय हो जाता है। इस तरह कल्प का आरंभ होता है। यह वो पहला पहर आरंभ होता है जबकि ईश्वर के समान भाव को प्राप्त हो जाते हैं। वही जब कलियुग का अंत आता है, तो उस समय एक वैराग्य आता है। आज दुनिया में जिस प्रकार के कृत्य हो रहे हैं, ये कृत्य मनुष्य में दिन प्रतिदिन इस संसार के प्रति विरक्ति और वैराग्य का भाव उत्पन्न हो रहा है कि ऐसी दुनिया कब तक चलेगी! हरेक के अंदर एक वैराग्य वृत्ति जागृत हो रही है। वहीं कल्प का अंत है। जिसमें शरीरों का परिवर्तन, काल का परिवर्तन, युग का परिवर्तन निश्चित है। इस तरह से यह समय परिवर्तन का चक्र है। कलियुग से सतयुग का युग परिवर्तन से, हरेक के शरीरों का भी परिवर्तन हो जाता है। ये कलियुगी तमोप्रधान प्रकृति का बना हुआ शरीर ही परिवर्तित होकर, सतयुगी सतोप्रधान प्रकृति के आधार पर हम दैवी शरीर को प्राप्त करते हैं। उस दुनिया में जाने के लिए हम स्वयं पात्र बनते हैं।

(क्रमश:)